अनछुए तथ्य

डॉ. कृष्ण कन्हैया

परिचय

डॉ. कृष्ण कन्हैया

जन्म स्थान : पटना, बिहार, भारत

शिक्षा : एम.बी.बी.एस.(आनर्स), एम.एस. (सर्जरी), एफ.आर.सी.एस. (एडिनबरा), एम. आर.सी.जी.पी. (लंदन), डी.एफ.एफ.पी. (लंडन)।

संक्षिप्त विवरण :

- कविता-शायरी के साथ-साथ संगीत का शौक़ विद्यार्थी जीवन से था जो समय के साथ-साथ ज़िंदगी से जुड़ता चला गया। बचपन में तुकबन्दी करता था पर नियमित रूप से लिखना कॉलेज के दिनों से शुरू हुआ जो 1995 में मेरे इंग्लैंड आने के बाद भी ज़ारी है। विदेश आने के बाद अपनी संस्कृति का गर्व, अपने संस्कार की गरिमा, अपने गाँव की शुद्ध सौंधी ख़ुशबू और अपनी मातृभूमि से अनवरत लगाव मेरी अन्तरात्मा को ज़्यादा उद्वेलित करने लगा था जिसकी झलक अब भी मैं अपनी कविताओं, ग़ज़लों और शेरो-शायरी में हरदम महसूसता हूँ।
- 2005 में 67 कविताओं की कविता संग्रह प्रकाशित हुई। 2008 में प्रकाशित हुई प्रवासी कविताओं का संकलन 'सूरज की सोलह किरणें' में मेरी कवितायें प्रकाशित हुईं। 2012 में द्विभाषीय कविता संग्रह 'किताब ज़िंदगी की' वाणी प्रकाशन से छपी। 2013 में प्रवासी भारतीयों की कविताएँ 'देशान्तर' में कवितायें छपीं। ई-पत्रिका 'अनुभूति' में कवितायें और ग़ज़ल छपी है। और त्रिमासिक पत्रिका 'आधुनिक साहित्य' और 'पुरवाई' में भी कवितायें/ग़ज़लें प्रकाशित होती हैं।
- 2020 में कविता संग्रह 'किताब सम्वेदना की' प्रकाशित हुई है।
- 2021 में कविता संग्रह 'अन्छुए तथ्य' प्रकाशनाधीन है।
- मैं 15 सालों से गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक संगठन से जुड़ा हूँ और 8 सालों से जनरल सेक्रेटरी हूँ। इंग्लैंड में देश-विदेश के रचनाकारों का हर साल कवि सम्मेलन आयोजित करता हूँ और संचालन भी करता हूँ। कोरोना लॉकडाउन के दौरान वर्चुअल प्लेटफार्म पर कई कवि-सम्मेलन का आयोजन और संचालन किया है।
- 2011 प्रशस्ति पत्र यू.के. क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन।
- 2012 में लक्ष्मीमल सिंघवी साहित्य सम्मान पत्र एवार्ड से भारतीय काउंसिल लंदन में सम्मानित हुआ।
- 2013 में ही पद्मानन्द साहित्यिक सम्मान से हाउस ऑफ लार्ड में सम्मानित किया गया।
- 2016 में विश्व हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा बर्मिंघम साहित्य उत्सव में सृजन भारती सम्मान।
- 2020 सम्मान पत्र हिंदी अकादमी एवम् आर.के. पब्लिकेशन समूह मुंबई, भारत।
- 2021 हिंदी एकादमी गौरव सम्मान, मुंबई महाराष्ट्र, भारत।

सम्प्रति : General Practioner with Special Interest
Waterfront Surgery, Brierley Hill, Dudley
DY5 1RU, West Midlands England UK

सम्पर्क: 182 Oakham Road Tividale Oldbury
West Midlands England UK B69 1PY
ई-मेल: kanhaiyakrishna@hotmail.com मोबाइल: +447803598165

अन्छुए तथ्य

प्रकाशक
विश्व हिंदी साहित्य परिषद
शालीमार बाग, दिल्ली-110088
मो. -9811184393
vhspindia@gmail.com

978-81-921563-6-1

₹ 300

अन्छुए तथ्य

कृष्ण कन्हैया

अनुक्रम

प्रस्तावना	....	7
अथ छुछुंदर-कथा	....	11
उपोद्घात	....	13
अनछुए विषयों को छूने की संवेदनशीलता और पैनी दृष्टि दिखलाई है कवि डॉ. कृष्ण कन्हैया ने	....	27
अनछुए तथ्यों के सच	....	37
मेरी कलम से	....	39
खिचड़ी	....	45
उम्दा	....	47
रेशम का कीड़ा	....	48
लाज	....	50
रात	....	52
शतरंज	....	54
हवा	....	56

शराब 58
वस्त्र 60
सामीप्य 61
वैमनस्य 62
ख़ून 63
मध्यमवर्ग 65
घुड़सवार 66
अच्छाई 68
चिड़ियाँ 69
टोपी 70
सांसद 71
होली 72
माँ 73
उम्मीद 75
नैतिकता 76
एहसान 77
दाल 78
गेहुँअनों से डर लगता है 79
सपने 81
कांधा 82
बोझ 83

विपत्ति 84
एहसानफ़रामोश 85
सूरज 87
बंधन 88
दूरगामी सच 89
धरातल 90
जाति–धर्म 91
चुनौती 93
कालजयी 94
शिखण्डी 95
चुगली 97
चलन 98
राजनीति 100
झाँवा 102
ईंट–पत्थर का धर्म 103
विचार 105
आँख 106
बाज़ार 107
अनाथ 109
चुनाव 110
धुंध 112

शेर 114
पथ 116
दौड़ 118
बिकाऊ 119
अजनबीपन 121
जीवन का घोड़ा 122
सात 123
खींचतान 124
रावण 126
सुबह-सुबह 128
पुरानी चीज़ें 130
चित्रगुप्त 132
आँगन का पेड़ 133
एहसान और अपमान 136
माँ की दहशत 138

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कविता के पाठकों के लिये डॉ. कृष्ण कन्हैया अपरिचित नहीं हैं। उनकी कविताओं के प्रति पाठकों में अदम्य रुझान देखने को मिलता है। उनकी कविताओं के प्रति पाठकों का यह रुझान अकारण नहीं है। कविता जब निरुद्देश्य वायव्य विहार करती-कराती है तब वैसे भी वह दीर्घायु नहीं हो पाती किन्तु जो कविता मानवीय संदर्भों में सोद्देश्य और उत्प्रेरक होती है, वह शाश्वत तो होती ही है, पाठकों का कण्ठहार भी बन जाती है। कहना यह होगा कि डॉ. कृष्ण कन्हैया की कविताओं में कहीं कोई भटकाव नहीं दिखायी पड़ता। उनकी कविताओं में सामाजिक मंगल की कामना का एकरस वह वेग है जो सहज ही उन्हें पाठकों के बीच लोकप्रियता प्रदान कर देता है। कहना तो यह चाहिए कि उनकी कविताओं में न केवल मानवीय अपितु मानवेतर जगत की रक्षा एवं कल्याण की भावना सर्वत्र व्याप्त है।

डॉ. कृष्ण कन्हैया की कविताओं में काव्य-अकाव्य का धूपछाही खेल चलता रहता है, उनकी आँख-मिचौनी देखने को मिलती रहती है। फिर भी, काव्योपयुक्त संवेदना का साथ उनके साथ सदा बना रहता है। लगता है, संवेदनाओं को कविता उनकी कविताओं में वैसे ही छू-छू कर भाग जाती है जैसे किसी नये नवेले जीजा को उसकी चपल-चुहल साली अचानक छू-छू कर कहीं दूर जा